m

29-6-67 ओम शान्तिः रात्री क्लास

तुम बच्चे जानते हो कि विश्व मे शान्तिः हो इसके लिय कितना हंगामा कर रहे है। बाप यहां शान्ति स्थापन कर रहे है। तुम बताते भी हो कि 9 वर्ष मे विनाश होगा। फिर विश्व मे शान्तिः हो जावेगी। ड्रामा के प्लान अनुसार। अनेक धर्म विनाश हो जावेंगे। सतयुग मे विश्व भर मे शान्तिः ही शान्तिः रहेगी। अखबारो मे भी लिख सकते है। शान्तिः के लिये कितना माथा मारते है। तुम बच्चे जानते हो कि यह लडाई तो लगनी ही है। कई बच्चे बडी रुची से पवित्र बनते है। समझते है कि पवित्रता अच्छी है। साधु लोगो के आगे भी माथा टेकते है। देवताओ को माथा टेकते है। पवित्र दुनियां मे ही पवित्र मनुष्य होते है। यहां कोई पवित्र हो ही नां सके यह है ही अपवित्र दुनियां। यह बाप ही बताते है। मनुष्य तो घोर अन्धेर मे है। अब तुम बच्चे कितने सोझेर मे हो। तुम जानते हो कि बाप को यादकरना है और पवित्र बनना है। सब तो पवित्र दुनियां का मालिक नही बनेंगे नां। बच्चे समझते तो है नां कि यह है कामन बात। बाप कल्प पहले मुआफिक स्थापना कर रहे है। मनुष्य से देवता बनाते है। गायन तो है नां। पुराने को नया बना रहे है योगबल से। सारा तुम बच्चो का यही पुरुषार्थ है कि हम प्योअर कैसे बनें? रवाद पडी हुई है। बाप को ही बुलाते है कि बाबा आकर हम पतितो को पावन बनाओ। तुम समझते हो कि हमारी आत्मा प्योअर थी अब इम्पयोअर बनी है। अभी फिर तुम प्योअर दुनियां का मलिक बन रहे हो। कितनी सहज बात है। इसमे मूंझने की तो दरकार ही नही। भक्ति मार्ग मे कितने मन्त्र जपते है। यहां तो सिर्फ बाप को याद करना है। बाप बच्चो को मन्त्र कैसे देंगे। सीधा रास्ता बताते है। यही वशीकरण मन्त्र है। बाप कहते है मुझे याद करेंगे तो पावन बन जावेंगे। याद जरुर करना है? यह अपने से पूछना है। हम कैसे सतोप्रधान बने। बाप को याद करने बिगर तो सतोप्रधान बन नही सकते। कोशिश कर पावन जरुर बनना है। मारते है वां कुछ भी करते है परन्तु मुझे पवित्र जरुर बनना है। इसमे चिल्लाने आद की बात नही। पुकारते तो है नां हे बाबा हमे नग्न करते है! बचाओं। शोर तो मचाती है नां। तुम बच्चो को समझाया जाता है कि पुरानी दुनियां से दिल नही लगाओ! बाप कहते है मै तुम बच्चो को पढाने आया हूं। ऐसे भी है जिनको बिलकुल ही विश्वास नही है। फिर जैसेकि ट्रेटर बन जाते है। माया का बन कर फिर विघन डालने लग पड़ते है। फिर भी राजधानी तो स्थापन होनी ही है। यह अन्दर मे निश्चय रहना चाहिये कि कुछ भी हो जावे हम तो सिवाय बाप की याद के रह नही सकेंगे। निश्चय बुधी विजयन्ति। कल्प पहले मुआफिक स्थापना हो रही है। इस सुगम युग पर ही तुम शिव शक्ति सेना गाई हुई हो। यह है ही पुरुषोतम बनने का सुहावना संगम युग। तो बच्चों कीबुधी मे कितनी खुशी होनी चाहिये। ऐम आब्जेक्ट ही यह है। इसलिये ही चित्र भी रखते है। भक्ति की भी कितनी सामग्री है। कितने दूरे-2 मन्दिरो मे जाते है पैसे खर्च करते। यह भी सब ड्रामा मे नूंध है। साधु सन्त आद भी पहले अच्छे थे। अब तो वो भी तमोप्रधान बन गये है। तुम कितने सौभाग्यशाली हो जो रावण से छूट कर अब शिव बाबा के बने हो। तो कितनी तुमको स्थाई खुशी होनी चाहिये। बुधी मे है कि अभी हम संगम पर है। फिर भी हम विश्व के मालिक बनेंगे। बाप को ही आकर पुरानी सृष्टी को बदलना है। नया बनाना है। नई सो पुरानी बनी है। फिर पुरानी सो नई बनेगी। विश्व पर शान्ति चाहते हो वो तो बाप हो बना रहे है समझाने के लिये, चित्र आद कितने अच्छे-2 बनाये है। परन्तु बन्दर बुधी समझते ही नही है। अभी तुम बच्चे 84जन्मों की कहानी को जानते हो। अनेक बार चक्र लगाया है और लगाते रहेंगे। इससे कब छूट नही सकते। एक का भी मोक्ष नही हो सकता है। यह अविनाशी ड्रामा है नां! तुम जानते हो कि पहले हम तो जंगल के कांटे थे। अब हम देवी फूल बन रहे है। ओम